पाठ्यक्रम का क्षेत्र (Scope of Curriculum) →

1- शिक्षा के उद्देश्य की प्राप्ति (Achievement of the Aims of Education) → शिक्षा की व्यवस्था पाठ्यक्रम पर आधारित होती है। जब तक पाठ्यक्रम का सही नियोजन नहीं किया जाता तब तक शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं हो सकती क्योंकि पाठ्यक्रम का स्वरूप शिक्षा के उद्देश्यों के अनुसार निर्मित होता है।

2- शिक्षा प्रक्रिया का व्यवस्थीकरण (Organisation of Educational Process) → पाठ्यक्रम एक ऐसा लेखा-जोखा है जिससे यह स्पष्ट रूप से अंकित किया जाता है कि शिक्षा के किस जीवन-स्तर पर विद्यालयों में कौन-2 सी क्रियाओं की तथा कौन से विषयों की शिक्षा दी जायेगी। इस प्रकार पाठ्यक्रम विद्यालयी कार्यक्रम की रूपरेखा बनाता है अथवा शिक्षा की प्रक्रिया को व्यवस्थित करता है।

3- क्या और कैसा ज्ञान (What and How much) →

पाठ्यक्रम अध्यापकों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। इसके बिना वे यह नहीं जान सकते हैं कि उन्हें क्या और कितना ज्ञान बालकों को देना है? पाठ्यक्रम के आधार पर ही वे ठीक प्रकार से काम करते हैं और उन्हें यह मालूम रहता है कि एक निश्चित अवधि के अन्दर उन्हें यह मालूम रहता है कि एक निश्चित अवधि के अन्दर उन्हें अमुक कक्षा में कितना कार्य समाप्त करना है।

Our business in life is not to get ahead of others, but to get ahead of ourselves.

Scanned with DocScan

4- समय एवं शक्ति का प्रयोग (Proper use of Time and Energy) → पाठ्यक्रम से अध्यापकों को यह ज्ञात रहता है कि उन्हें क्या सिखाना है और कितने समय में सिखाना है? इसी प्रकार छात्रों को भी यह ज्ञान रहता है कि उन्हें क्या सीखना है। और कितने समय में सीखना है। इस प्रकार शिक्षक और छात्र दोनों ही एक निश्चित समय के अन्दर कार्य पूरा करते हैं। अतः इसके द्वारा समय एवं शक्ति का सदुपयोग होता है।

5- ज्ञानोपार्जन (Acquisition of Knowledge) →

ज्ञानोपार्जन करने में पाठ्यक्रम बालकों की सहायता करता है। परन्तु मनुष्य ने अपनी सुविधा के लिए इसके कई भाग कर लिये हैं; जैसे - साहित्य, गणित, विज्ञान, सामाजिक विषय आदि। ज्ञान के इन विभिन्न भागों के ज्ञानार्थ पाठ्यक्रम की रचना की जाती है।

6- चारित्रिक विकास (Development of character) →

चारित्रिक विकास की दृष्टि से से भी पाठ्यक्रम एक उपयोगी वस्तु है। शिक्षा इस बात पर बल देती है कि बालकों के अन्दर मानवीय गुण जैसे - सत्य, सेवा, त्याग, परोपकार सद्भावना आदि उत्पन्न किये जायें। यह कार्य पाठ्यक्रम के द्वारा ही पूर्ण होता है। इन गुणों को विकसित करके उन्हीं के अनुसार बालकों से आचरण करवाना पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

Scanned with DocScan

7- पाठ्यपुस्तकों का निर्माण (Preparation of Text Book)→

पाठ्यक्रम के आधार पर ही पाठ्यपुस्तकों की रचना की जाती है। पाठ्यपुस्तकों में वही सामग्री रखी जाती है जो किसी स्तर के पाठ्यक्रम के अनुकूल हो। पाठ्यक्रम न होने पर पुस्तकों में अनावश्यक बातें भी सम्मिलित हो सकती है। पाठ्यक्रम इस स्थिति से हमारी रक्षा करता है।

(8)- मूल्यांकन में सरलता (Easy Evaluation)→

किसी कक्षा स्तर के पाठ्यक्रम के आधार पर ही उस कक्षा के छात्रों की योग्यता का मूल्यांकन सम्भव होता है। पाठ्यक्रम के अभाव में मूल्यांकन कठिन होगा।

9- नागरिकों का निर्माण (Preparation of Citizen)→

शिक्षा का उद्देश्य उपयोगी एवं आदर्श नागरिकों का निर्माण करना है। आदर्श एवं उपयोगी नागरिक वही है जिसकी शक्तियाँ पूर्णरूप से विकसित हों, जो कानून का पालन करे, न्यायानुकूल आचरण करे और जिसमें स्वतंत्र चिन्तन और निर्णय की शक्तियाँ शामिल हों, इन बातों की क्षमता

12 Sunday

एवं योग्यता उत्पन्न करने के लिए ही पाठ्यक्रम का निर्माण होता है।

10- अन्वेषकों की उत्पत्ति (Origin of Discoverer)→

पाठ्यक्रम ऐसे ज्ञान पिपासुओं तथा विद्वानों को जन्म देता है जो अध्ययन, उद्योग एवं शोधकार्य, ज्ञान में वृद्धि करते हैं।

Scanned with DocScan